an>

Title: Regarding polluted water bodies in Begusarai district, Bihar.

**डॉ. भोला सिंह (बेगूसराय)** ः बिहार राज्य के बेगूसराय जिला में गंगा, बूढ़ी गंडक, बलान, बैंती, वाया और बागमती नदियों के किनारे 2/3 हिस्से में मानव आबादी है। इन नदियों के किनारे सैंकड़ों गांव जो बसे हुए हैं रासायनिक खाद के अंधाधुंध प्रयोग से उनका आंतरिक जलस्रोत विषैला हो गया है। आर्सेनिक प्रदूषण से लाखों लोगों के सामने पेयजल की भीषण समस्या हो गई है। वन प्राणी तो पहले से ही त्रस्त हैं अब पशु और मानव समाज उसके जहर से भीषण रूप से आक्रांत ही नहीं है बल्कि कई भयानक रोगों के शिकार हो रहे हैं। गंगा किनारे के इस भू-भाग में बरौनी प्रखंड का राष्ट्रकवि की जन्मभूमि सिमरिया, मल्हीपुर, विषणपुर, जगतपुरा, रचियाही, उलाव, कैलाशपुर, रामदीरी सिंहमा, मटिहानी चौक छितरौर, मनिअप्पा, नयागांव, सोनापुर, भराठ, महेन्द्रपुर, दरियापुर, गोदरगामा, खडगपुर, मथारार, लाल दियारा, गोखले नगर, नौरंगा, भगतपुर, पहाड़पुर, मनेसरपुर, परमानंदपुर, शादीपुर दियारा और तेघड़ा प्रखंड के बरौनी सोकहरा, फलवरिया, मधुरापुर, बजलपुरा, अयोध्या, झमटिया, दादुपुर, विरयाकोट, चमथा, फतेहा, रानी, नारेपुर और विरपुर प्रखंड नावकोठी एवं बखरी प्रखंड के दर्जनों गांव यानी बेगूसराय जिला का तीन हिस्सा आर्सेनिक जल से आक्रांत है। नदियों का जल न मवेशियों के लिए है, न पेयजल है, न भोजन बनाने के लिए है। वापाकल भी आर्सेनिक जल से भरा हुआ है। बेगूसराय जिले में दर्जनों उद्योग लग रहे हैं।

अतः भारत सरकार से मांग करते हैं कि उच्च स्तरीय तकनीकी जांच दल बेगूसराय जिला की नदियों के किनारे के पेयजल की जांच करें और एक व्यापक योजना बनाकर कार्रवाई करें।